ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v7.i11.2019.3733

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

नर्मदामयी अमृतलाल वेगड़ का कलापक्ष

डॉ. रेखा धीमान [1]
[1] सहप्राध्यापक चित्रकला शा. हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय भोपाल (म. प्र.)

शोध-सारांश
'शिखर सम्मान', 'शरद जोशी सम्मान', 'सृजन सम्मान' तथा महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन जैसे महत्वपूर्ण सम्मानों से सुशोभित श्री अमृतलाल वेगड़ नर्मदा प्रेम से ओत-प्रोत रहे हैं। उन्होंने अपने धर्म, कर्म और संस्कृति में नर्मदा- सौंदर्य को ही देखा। नर्मदा पद यात्रा के दौरान आपका एक ही मंत्र होता था, 'नर्मदा तुम कितनी सुन्दर हो' यही जाप करते हुए ही अपनी नर्मदा परिक्रमायें पूरी की। इस दौरान आपने उस पल को उत्साह के साथ महसूस किया। मध्यप्रदेश में अनवरत प्रवाहित होने वाली जीवनदायिनी 'नर्मदा नदी' का व्यक्तित्व पाकर ही श्री अमृतलाल वेगड़ की कला-यात्रा पूर्णता को पाती है। आपकी नस-नस में, संपूर्ण शिराओं में चेतना की लहर के दर्शन रेखांकनों, चित्रों, कोलाज के माध्यम से किये जा सकते हैं, जो कि आपकी नर्मदा परकम्मा के दौरान सृजित किये गये। आपकी पद यात्रा का उद्देश्य धार्मिक न होकर सांस्कृतिक रहा है। आपने पर्यावरण सौंदर्य को आत्मीय और श्रद्धा से देखा।

मुख्य शब्द – नर्मदामयी, कलापक्ष, अमृतलाल

Cite This Article: डॉ. रेखा धीमान. (2019). "नर्मदामयी अमृतलाल वेगड़ का कलापक्ष." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 7(11SE), 185-88. https://doi.org/10.5281/zenodo.3587383.

अमृतलाल वेगड़ जब चलने लगते हैं तो रास्ते थक जाते हैं पर पैर नहीं; कांटे, पत्थर, चट्टानें, बीहड़, जंगल, जानवर, आदिम संस्कृति के लोक मानव, सबके सब नर्मदा का अचमन कर यदि किसी परकम्मी को प्रणाम करते हैं तो वह है सिर्फ एक परकम्मी जिसको नर्मदा ने अपने अमृतजल से नाम दिया है - अमृतलाल वेगड़।[1]

आपका जन्म 3 अक्टूबर 1928 को जबलपुर मध्यप्रदेश में हुआ। आपके माता-पिता मूलतः कच्छ गुजरात के रहने वाले थे और बाद में मध्यप्रदेश के जबलपुर शहर में आकर बस गये। वर्तमान में तीन भाईयों का सयुंक्त परिवार है। आप सामान्य कद-काठी, इकहरा बदन, उस पर खादी का कुर्ता पजामा, उन्नत मस्तक, आँखों पर चश्मा आपके व्यक्तित्व का परिचायक है। आप मृदुभाषी, दृढ़ निश्चयी और संवेदनशील व्यक्ति है। आपकी जीवन-संगिनी कान्ता वेगड़ पति और परिवार के प्रति समर्पित सदाचारी, श्रमशील एवं सहृदयी महिला है, जो अपने पति के साथ कदम के साथ कदम मिला कर परकम्मावर्ती रही है। आपका पूरा परिवार गांधी प्रवृत्ति का है। गांधीवादी नियमों को आत्मसात कर स्वयं से संबंधित प्रत्येक कार्य स्वयं करने की आदत है।[2]

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3587383

सादगीपूर्ण और आडम्बरों से दूर रहना, पैदल चलना, श्रम करना आपकी आदतों में शामिल है। यही कारण रहा कि निसर्ग से निकटतम संबंध स्थापित कर सके। आपका मुख्य उद्देश्य बुद्धिजीवियों और सौंदर्य दृष्टि रखने वाले जनमानस को पवित्र नदी नर्मदा सौंदर्य से अवगत कराना रहा है उनका कहना है कि ''नर्मदा ही मेरी कृतियों का एकमात्र विषय रही है। मैं नर्मदाव्रती चित्रकार हूँ - लेखक हूँ। मैं नर्मदा का सांस्कृतिक संवाददाता हूँ। मैं अपने सौंदर्य को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाना चाहता हूँ। चाहे तो आप मुझे नर्मदा सौंदर्य का हरकारा भी कह सकते हैं।''[3]

पर्यावरण से जुड़े श्री अमृतलाल वेगड़ की अपनी पहचान उनकी कृतियों (चित्र, कोलाज एवं साहित्य) से है।

शिक्षा

आपका बाल्यकाल और साधारण शिक्षा जबलपुर में हुई। बाल्यकाल से ही चित्रकला में आपकी रूचि थी। कला की वास्तविक शिक्षा आपको शांति निकेतन के सुरम्य वातावरण में हुई। 1948-1952 तक का विद्यार्थी जीवन शांति निकेतन के कला भवन में व्यतीत हुआ। यहाँ का सुरम्य, शांतिपूर्ण, कलात्मक वातावरण विद्यार्थियों को सृजनात्मकता की ओर अग्रसर करने में सहायक है। इस वातावरण में ही आपको कल्पनाशीलता और सौंदर्य दृष्टि आचार्य नंदलाल बोस (बसु), विनोद बिहारी मुखर्जी तथा रामकिंकर बैज के माध्यम से प्राप्त हुई। उस समय श्री राममनोहर सिन्हा भी वहीं अध्ययन कर रहे थे। वे आपसे एक वर्ष सीनियर थे।

आपने स्वरचित पुस्तक अमृतस्य नर्मदा में लिखा है -
''सौंदर्य को देखने की दृष्टि मुझे अपने प्रातः स्मरणीय गुरूओं से मिली। आँखों का काम है देखना। उनमें यह विवेक नहीं कि सुन्दर असुन्दर का फर्क कर सके। उसके लिये तो सभी समान है। जिन भाग्यवानों को सौंदर्य परखने की दृष्टि मिली हो वे ही सुन्दर-असुन्दर का फर्क कर सकते हैं। बहुधा यह दृष्टि गुरूओं से मिलती है। अगर वह न हो तो सामने सौंदर्य का पारावार हो, फिर भी हमें दिखाई न देगा। उसे देखकर भी अनदेखा कर देंगे। हमारे भीतर सोए पड़े इस सौंदर्य बोध को प्रायः गुरू जगाते हैं।''[4]

गुरू से प्राप्त दृष्टि और शांति निकेतन का मनोहारी वातावरण, जिसमें रामकिंकर बैज के बड़े-बड़े स्कल्पचर तो कहीं पर बड़े-बड़े म्यूरल सृजन को प्रेरित करने के लिये पर्याप्त है। वहाँ की विशेष प्रकार की झोपड़ी में कार्य करने का एक अलग ही आनंद आता है। आचार्य नंदलाल बोस से आपने वाश टेक्नीक सीखी। सन् 1952 में विश्व भारती शांति निकेतन पश्चिम बंगाल से ललित कला में उपाधि प्राप्त की। इसके पश्चात् 1953 में जबलपुर आये। यही रह कर कला साधना करते रहे। वाश तकनीक में चित्र बनाने के लिये आपने Waterman England Paper का उपयोग भी किया। आपके द्वारा टेम्परा विधि से बने म्यूरल/चित्र भी उल्लेखनीय है।

कलात्मक-जीवन

शांति निकेतन से शिक्षा प्राप्ति के बाद 1953 में जबलपुर आ गये। यहाँ आकर शासकीय कला निकेतन, जबलपुर (म.प्र.) में टेक्नीकल पद पर नियुक्त हुए। यहाँ पर ही आपकी कला अभिरूचि का मार्ग प्रशस्त हुआ। चित्रकला एवं कोलाज का मुख्य रूप दृश्य चित्रों और संयोजनों में दिखाई देता है। प्रारंभ में आपके चित्र 'वाश और टेम्परा' शैली के हैं और बाद के चित्र 'कोलाज' विधा में है और यही आपकी निजी पहचान है।

सन् 1961 में शासकीय कला निकेतन के प्राचार्य श्री एस.के. दास थे, जो कि इंजीनियर होने के साथ ही कला-प्रेमी भी थे। वे विद्यार्थियों को चित्रकला के प्रति प्रोत्साहित भी किया करते थे। उनका यह प्रयास रहता था कि प्रतिदिन विद्यार्थियों द्वारा नोटिस-बोर्ड पर नवीन रेखांकन चस्पा किये जायें। विद्यार्थियों के मार्गदर्शन में श्री अमृतलाल वेगड़ का सदैव सहयोग रहता था। समकालीन कलाकारों में स्व. श्री राममनोहर सिन्हा, विष्णु चौरसिया, हरि भटनागर, हरि श्रीवास्तव, भगवानदास गुप्ता, कामता सागर, साजन मैथ्यू राजेन्द्र कामले, सुरेश श्रीवास्तव आदि साथ थे।आपकी प्रथम नर्मदा परिक्रमा सन् 1977 में और दूसरी 1987 में की। आपके कलात्मक जीवन में 'कोलाज' विधा का प्रादुर्भाव नर्मदा पदयात्रा के साथ ही हुआ। कोलाज अर्थात् कुछ भी चिपकाकर बनायी गई कलाकृति। इसमें कोई भी सामग्री चिपका कर कलाकृति बनायी जा सकती है। किन्तु आप केवल कागज चिपकाने तक ही सीमित रहे। आप कागज को कैंची से सफाई से काटकर चिपकाते थे। यहाँ तक कि कलाकृति पूर्ण होने पर स्वंय के हस्ताक्षर भी चिपकाकर ही करते थे। आपके कोलाज सिर्फ कोलाज न लगकर कभी जल रंग तो कभी तेल रंग तो कभी लिनोकट का अहसास कराते हैं।

नर्मदा परिक्रमा के दौरान किये गये रेखांकन ही कोलाज का आधार होते थे। पहली यात्रा के दौरान आपने काफी रेखांकन किये। साथियों और विद्यार्थियों को दिखाने के उद्देश्य से सात-आठ स्केचेस बड़े करवाये, जिससे कालेज के नोटिस बोर्ड पर लगा सकें। उन्होंने रंगीन कागज चिपकाकर बना दिया और बोर्ड पर लगा दिया। वह छात्रों और साथियों को बहुत अच्छा लगा। तब से कोलाज बनाने का सिलसिला चला तो आज तक चल रहा है।[5]

नर्मदा पदयात्रा ने अभिव्यक्ति के दो माध्यम दिये, एक चित्रकला और दूसरा साहित्य लेखन। आपकी समस्त रचनाओं का एक ही विषय है - नर्मदा। समाचार पत्र दैनिक भास्कर में आपने उल्लेख किया है -

मेरी नर्मदा परिक्रमा से ही मेरे लेखों और चित्रों को आकार मिला। सच तो यह है कि इन पद यात्राओं के दौरान ही मुझे प्रकृति से धार्मिक प्रेम हुआ।

आपकी रचनाओं 'अमृतस्य नर्मदा', 'तीरे-तीरे नर्मदा' और 'सौंदर्य की नदी नर्मदा' में यात्रा वृत्तांत का वर्णन है। आपकी पुस्तकों का अनुवाद अंग्रेजी, गुजराती, बंगाली भाषाओं में भी हुआ। अनेक पत्र-पत्रिकाओं में सचित्र लेख प्रकाशित हुए। जैसे कला दीर्घा, समकालीन कला आदिवासी लोककला परिषद द्वारा प्रकाशित कलावार्ता का 50 अंक अमृतस्य नर्मदा Sketches from the river प्रतिभा इण्डिया दिल्ली जर्नल्स। इसके अलावा समाचार पत्रों में सचित्र लेख प्रकाशित।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3587383

1977 में की गई परकम्मा में उनकी पत्नी कान्ताबेन तथा विद्यार्थी समूह साथ रहता था। इस दौरान आपने अनगिनत रेखांकन किये, जिन्हें निवास स्टूडियो में कोलाज में परिवर्तित किया। आपके कोलाज रेखांकन पर आधारित अवश्य होते थे किन्तु वे रेखांकन को कसकर पकड़ते नहीं थे। समयानुसार उसमें परिवर्तन भी कर देते थे। प्रारंभिक कोलाज सपाट रंगीन कागज के बने होते थे, किन्तु बाद में नेशनल ज्याग्राफिक पत्रिका के आने से विभिन्न रंगतें और टेक्सचर का नया आयाम मिला। इसका पेपर आकर्षक और पतला होता है। इसकी तीन चार पर्ते लगाने पर भी कोई फर्क नहीं पड़ता। आप एक ही विषय को अलग-अलग रूप में प्रस्तुत करते थे। हरेक का अपना सौंदर्य होता था।

आपने कोलाज विधा द्वारा अनेको दृश्य चित्र और मानवीय संयोजनों की रचना की। आपके कोलाजों का आकार छोटा (14"x18") लगभग होता है। कृतियों के विषय नर्मदा तट तक ही सीमित रहे। नर्मदा सौंदर्य के साथ-साथ नर्मदा तट का जनजीवन भी आपकी कृतियों में दिखाई देता है। भू-दृश्यों को स्वनिजता के साथ चित्रांकित किया है। आपके सश रेखांकन जिनमें गति, लय और विन्यास समाहित है। कोलाजों में जल रंग, तेल रंग और लिनोकट तीनों के दर्शन होते हैं। कृतियों के मुख्य विषय नर्मदा में टापू, प्रपात में स्नान, प्रखण्ड, कीर्तन, नर्मदा की खड़ी कगार, नर्मदा पर स्नानार्थी, रात्रि में घाट आदि रहे हैं। चित्रकला, कोलाज और रेखांकन और लेखन के माध्यम से एक नदी संस्कृति को जीवित किया, जो आनंददायक ही नहीं बल्कि भारतीय-संस्कृति को व्यक्त करने वाले गूढ़तम अभिलेख हैं।

नर्मदा यात्रा के दौरान सृजित की गई कृतियों की प्रदर्शनी सर्वप्रथम 1980 में म.प्र. कला परिषद् में की। इसके बाद प्रदर्शनियों का सिलसिला चल निकला। 1981 और 1986 में म.प्र. कला परिषद द्वारा वार्षिक प्रदर्शनी में वेस्ट अवार्ड प्राप्त किया। 1986 और 1990 में शिखर सम्मान पुरस्कार हेतु जूरी सदस्य भी रहे।

चित्रकला के क्षेत्र में मध्यप्रदेश शासन के संस्कृति विभाग द्वारा सन् 1994-95 में ''शिखर-सम्मान'' से सम्मानित किया। आपकी कृतियाँ अनेक स्थानों पर संग्रहित हैं। आप पर्यावरण संरक्षण आंदोलन के अध्यक्ष भी रहे हैं।

आपने स्वयं को एक चित्रकार, कोलाजिस्ट और लेखक के रूप में स्थापित किया है। इसके साथ ही कवि हृदय वाले व्यक्ति भी थे। चित्र और साहित्य नर्मदा नदी के दो किनारे हैं, जो साथ-साथ प्रवाहित होते रहे हैं।अपने कृतित्व के कारण जाने जाने वाले अमृत लाल वेगड़ 6 जुलाई 2018 को इस संसार से विदा हो गये।

संदर्भ

[1] समावर्तन 2009 - अमृतलाल वेगड़ से शांतिलाल जैन की बातचीत - नर्मदा के सौंदर्य से आख्यानकर्ता से एक मुलाकात - पृष्ठ - 23
[2] व्यगित साक्षात्कार दिनांक - 4.7.2011 - निवास स्थान
[3] समकालीन कला - अंक 23 (जुलाई से अक्टूबर 2007) आत्मकथ्य अमृतलाल वेगड़ - 'मेरी कला नर्मदा के लिये' पृष्ठ-25
[4] वेगड़ अमृतलाल - 'अमृतस्य नर्मदा' - मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल - 2009, पृष्ठ - 185
[5] समावर्तन 2009 - अमृतलाल वेगड़ से शांतिलाल जैन की बातचीत नर्मदा के सौंदर्य के आख्यानकर्ता से एक मुलाकात - पृष्ठ - 25 एवं 26